पंचम अध्याय

से. रा. यात्री के अन्य महत्त्वपूर्ण उपलब्ध उपन्यासों का अनुशीलन

से. रा. यात्रीजी एक जाने-माने कहानीकार तथा उपन्यासकार हैं । यात्रीजी ने उपन्यासोंका सृजन करते समय विस्तार की अपेक्षा पात्र की मानसिकता को ही अधिक महत्त्व दिया है । कोई भी उपन्यास उन्होंने पहले से तय करके नहीं लिखा है क्योंकि साहित्य सृजन तो लेखक की अपनी मानसिकता के भीतर की अनुभुति का परिणाम होता है । यात्रीजी साहित्य सृजन करते समय उस विषय की अभिव्यक्ति महत्त्वपूर्ण मानते हैं। उपन्यास के कथ्य से प्रामाणिक रहकर ही यात्री ने साहित्य का निर्माण किया है । समाज में स्थित सवालों का विज्ञापन करके उपन्यास का विषय और आशय दोनों का सुंदर समन्वय स्थापित किया है । यात्रीजी अपने उपन्यास में वास्तवता के आभास के साथ सामाजिक सवालों का निरुपण करते है । प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध में यात्रीजी के अन्य महत्त्वपूर्ण उपन्यासों की कथावस्तु का अनुशील उचित लगता है । इसीलिए उनके उपलब्ध हुओी महत्त्वपूर्ण उपन्यासों की कथावस्तु का अनुशीलन करने का प्रयास किया है । यात्रीजी का 'लौटते हुए' यह बृहतकाय उपन्यास है । इस उपन्यास में यात्रीजी ने उच्चशिक्षित होने पर भी कहीं नौकरी नहीं मिलती यह समाज की कड़वी सच्चाई को अभिव्यक्त किया है । 'लौटते हुए' उपन्यास विश्वविद्यालयीन युवक की बेकारी की समस्या को पाठकों के संमुख प्रस्तुत करता है ।

5.1. लौटते हुए (1974)

से.रा. यात्री के प्रारंभिक उपन्यासों में 'लौटते हुए' **(1974)** यह बृहतकाय उपन्यास है । विश्वविद्यालयीन युवक की बेकारी तथा शोषण के कारण जो हालत होती है उसी को प्रस्तुत किया है । उपन्यास के नायक रेणु का अपने गाँव से दूर विश्वविद्यालय में एम्.ए. की शिक्षा प्राप्त करने जाना, रेणु के पिताजी की मौत के बाद रेणु के परिवार का पोषण उनके चाचा द्वारा करना, एम्-ए. के बाद रेणु का छात्रावास में रहकर लॉ की पढाई करना, एक दिन रेणु की मुलाकात संयोग से डॉ. खन्ना से होना, रेणु का अपनी गरीबी के कारण अमीरों की पार्टी में जाना पसंद न करना,

परंतु उसका मन पार्टी की ओर आकर्षित होना, रेणुका मन-ही-मन सोचना "तुम अपने घिसे सूट में ही चलो और चलकर दिखला दो कि वहाँ जमा हुए दिखावटी, स्वार्थी प्रवंचकों के बीच एक ऐसा आदमी भी है जिसके कपड़े चाहे तार-तार हों लेकिन जो किसी अभिजात्य की इंच मात्र परवाह नहीं करता ।"[1]

डॉ. खन्ना के कारण मेजर लाल द्वारा अपनी पार्टी में रेणु का स्वागत करना, रेणु का निवेदता को देखकर मोहित हो जाना । रेणु का मन-ही-मन निवेदिता से प्यार करना । निवेदिता के खयाल में रेणु का छुट्टियों में भी कहीं नहीं जाना । निवेदिता के खयाल में रेणु का मेजर लाल के घर पहुँचना, निवेदिता के साथ किसी अनजान लड़के को देखकर रेणु द्वारा मेजर के घर कभी न आने की प्रतिज्ञा करना, परंतु यह प्रतिज्ञा पूरी न होना, ये घटनाएँ रेणू के जीवन में परिवर्तन लाने स्थितिमें घटित होनी है ।

रेणु की मेजर लाल और डॉक्टर खन्ना से इतनी गहरी दोस्ती हो जाती है कि एक छात्र होने के बावजूद भी उन दोनों के साथ बैठकर शराब पीने में रेणु को शर्म महसूस नहीं होती । रेणु अपनी शराब पीने की बात निवेदिता से छुपाने की कोशिश करता रहता है जो कामयाब नहीं होती । रेणु उसके सामने अपने आप को आदर्श रुप में रखना चाहता है लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं होता — "यह एक दु:खद स्थिति होती है कि आप कभी एक विशेष संदर्भ में स्वीकृत होना चाहते है और माहौल आपके विरोध में चुगलखोर हो जाता है ।"[2] जब अनजाने से रेणु का भाँग पीने का भंडा भी निवदिता के सामने फूट जाता है तो रेणु को बड़ी ग्लानी होती है । कुछ दिनों बाद रेणु मेजर लाल की बेटी - निवेदिता को पढ़ाने जाने लगता है । उसे पढ़ाने के चक्कर में रेणु स्वयं की पढ़ाई भूल जाता है । रेणु निवेदिता के मोह में इस कदर घायल हो चुका था कि अपनी शाम की लॉ की क्लास के बजाय वह मेजर के घर जाने लगता है । एक दिन भयानक वर्षा और तुफान के कारण निवेदिता रेणु को रुकने का आग्रह करती है लेकिन रेणु मानता नहीं तो निवेदिता स्वयं उसे रेनकोट और टार्च देती है ।

रेणु का परीक्षा के नज़दीक आने की वजह से और प्यार के चक्कर में फेल हो जाने के डर से निवेदिता से मिलना बंद कर देना । एक दिन निवेदिता का खत के द्वारा रेणु से माफी मांगते हुए है रेणु को विरक्त न होने की गुजारिश करना । रेणु का निवेदिता को भूल नहीं सकना । उसे भूलने के लिए उसका शराब पीते रहना, शराब

पीने के बाद निवेदिता से मिलने की रेणु की चाह का प्रबल होना । रेणु को निवेदिता की बात याद आना — "आप यह सब क्यों सीख रहे हैं— मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ - आप यह चीज़ शुरु मत कीजिए ।"[3] शराब पीने के कारण रेणु अपने आप पर चीज उठता है । यहाँ, निवेदिता रेणु को नशापान से दूर रखकर आदर्श की ओर प्रतिष्ठापित करना चाहती है ।

निवेदिता को पढ़ाने के बदले में मेजर लाल ने सन्हृदयता से रेणु को पाँच सौ रुपये दिये थे । परीक्षा होने के साथ ही रेणु का निवेदिता से संबंध टूट जाता है । निवेदिता से बिछड़ जाने से रेणु को लगता है - "निवेदिता मेरे लिए एक रंगीन ख्वाब था जो आँखे खुलते ही विलीन हो गया - मेरी नियाति केवल जड़ताओं से लड़ते जाने की है ।"[4] रेणु के इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि उसने जीवन में काफ़ी संकटों को झेल लिया है ।

एक दिन डॉक्टर खन्ना द्वारा रेणु की मुलाकात रिफ्युजी धवन साहब से करवाना । धवन साहब की लड़की-राज के प्रेमीद्वारा खन्ना की खूब पिटाई होना । रेणु का राज की तरफ आकर्षित होना, रेणु का किसी-न-किसी बहाने राज से नैकट्य स्थापित करना । इससे स्पष्ट है कि रेणु यह बहुत चंचल वृत्ति का आदमी है । वह किसी एक के साथ निष्ठता से प्यार नहीं करता । अपनी चंचल और कामुक प्रवृत्ति के कारण ही निवेदिता के सौंदर्य से मोहित हो गया था और अब राज के सौंदर्य में पागल हो गया है । वह करता है - "सद्य: धुले बालों की महक मेरे नथुनों में घुसने लगी और राज के समीप्य से मेरी पूरी देह में एक अनोखा नशा-सा छाने लगा । मैं उसके चेहरे और सिर को अपने बहुत करीब महसूस करके विचालित-सा होने लगा ।"[5] रेणु के इन मनोद्गारों से उसकी चंचल वृत्ति स्पष्ट हो जाती है । उसका तितली जैसा व्यक्तित्त्व यहाँ उभरा है, जो तितली कभी-एक फूल का आस्वाद नहीं लेती ।

उपन्यास पढ़ते समय ऐसा लगने लगता है कि रेणु की जिंदगी में राज के आने की वजह से रेणु निवेदिता को भूल गया, लेकिन रेणु जब भी राज की आँखो में देखता है तो उसे निवेदिता का ही चेहरा दिखाई देता है । अपने अंतर्मन की गहराई में निवेदिता को कोशिश करने के बावजूद भी वह भूल नहीं सकता । रेणु प्रोफेसर बनने पर भी राज के घर में ही रहता है । धवन साहब की मौत के बाद तो रेणु उनके घर का बेटा ही बना रहा । अपने जिंदगी में राज

की वजह से आनेवाले चार खुशियों के क्षणों को अपने दामन में बटोर कर रेणु हमेशा के लिए वहाँ से चला जाता है ।

नायक रेणु भगौड़ा है । अपने चाचा द्वारा रेणु की बहन शोभा की शादी के लिए लड़का दिखाया जाता है , परंतु रेणु को यह रिश्ता मंजुर नहीं है ताकि आर्थिक अभाव के कारण वह शोभा की शादी करने में असमर्थ है । गिरवी रखे खेत को छुडाने के लिए चाचाजी उसे बुलाते हैं रेणु कुछ पैसे भेजकर अपनी जिम्मेदारी टाल देता है । अर्थात रेणु अपनी प्रतिबध्दता निभाने में दुर्बल लगता है । रेणु को उच्चविद्याविभूषित होने पर भी नौकरी नहीं मिलती तो वह 'कौमी आवाज' नामक समाचार-पत्र में सह-संपादक बन जाता है और नारी जगत् की खबरों को छापता है । समाचार-पत्र के संपादक के साथ रेणु की पटरी नहीं बैठती । सारे-के-सारे काम रेणु को ही करने पड़ते, रेणु उच्चशिक्षित होने की वजह से उसे निम्न काम करने में शर्म महसूस होती, एक दिन वह संपादक ककोड़वी से झगड़ा करके नौकरी से इस्तीफ़ा दे देता है । तो ककोड़वी साहब उसे कहते है - "रेणुभूषण आपने-अपने 'इगो' को सुपर रखने के लिए गलत स्थिति चुनी - आपके रास्ते में बहुत देर तक काँटे ही रहेंगे । गुडलक आई विश यु हैप्पी रोमिंग ।"[6] ककोड़वी के कथन की सचाई रेणु के आमने आने में देर नहीं लगती । अनावश्यक 'इगो' के कारण रेणु को काफ़ी कठिणाईयों का सामना करना पड़ता है ।

काफ़ी कोशिशों के बाद रेणु का एक देहात के कॉलेज में प्रोफेसर बनना, वहाँ के अशिक्षित सेक्रेटरी द्वारा प्रिंसीपल से गाली के साथ संवाद स्थपित करना, तनखा में भी बिल्डींग फंड तथा अन्य कारणों से कटौती करना, पूरी तनखा न मिलने के कारण प्रिंसिपल की माँ का और बहन का बीड़िया बनाकर बेचना, इन घटनाओंसे श्रीलाल शुक्ल के 'रागदरबारी उपन्यास की याद आती है । आज की शिक्षा-व्यवस्था अल्पशिक्षित, अशिक्षित राजनीतिओं के हाथ में जाने के कारण उच्चविद्याविभूषितोंका शोषण कितना तीव्र बन रहा है, इसका यथार्थ बोध होता है । प्राध्यापकों की तनखा में कटौती करके शिक्षा-संस्थाचालक कैसे अपनी खुशियाँ मना रहे हैं, इसका बोध यहाँ होता है । इससे शिक्षा व्यवस्था का आधुनिक बोध प्रस्तुत होता है । फ्लैश बैक शैली, संवाद शैली, कथात्मक शैली आदि शैलियों का प्रयोग यात्रीजीने किया है । कथावस्तु पात्र-चरित्रचित्रण, वातावरण भाषा-शैली की दृष्टि से उपन्यास सफल है । यहाँ इस वास्तव स्थिति को प्रस्तुत किया है कि उच्चशिक्षित लोगों का शोषण करनेवाले अशिक्षित, मुफ्तखोर सेक्रेटरी को लोग चूपचाप सहन करते हैं । इस स्थिति को देखकर रेणु वहाँ से चल देता है ।

रेणु को खन्ना की बात याद आने लगती है । रेणु इस रिश्वतखोरी की व्यवस्था से खीज उठता है और इस व्यवस्था को बदलना चाहता है तो खन्ना उसे समझाता है कि यह किसी अकेला का काम नहीं है - "तुम पहले खुद को जीने के काबिल बनाओ बाकी बातें बाद में सोचना । कुछ मकाम ऐसे हैं जहाँ समझौते जरुरी है ।"[7]

रेणु को नौकरी मिलने तक अपने घर में आ के रहने की दावत खन्ना देता हैं । किंतु रेणु का अंहकार ऐसा करने को राजी न था । रेणु शहर के बाहर रहने लगता है । वहाँ उसकी एक रिक्शावाले से दोस्ती हो जाती है । रामहरण से काफ़ी मिन्नते करके उसकी रिक्शा रात में चलाने लगता है । रिक्शा चलाने के समय की मानसिक अवस्था को प्रस्तुत करते समय यात्री लिखते है - "मेरी शिक्षा और संस्कार, संकल्पों, विकल्पों के मायाजाल फैलाने लगे और मुझे आदमी के पक्ष में सोचा हुआ अपना फैसला बहुत कमज़ोर और बौध्दिक लगने लगा।"[8]

पेट की आग ने रेणु को समझौतावादी बना दिया । पेट की आग उसे रिक्शा खींचने पर मजबूर करती है । एक दिन रेणु अजातशत्रू के बच्चें का इलाज कराने खन्ना के पास ले जाता है वहाँ उसे निवेदिता के आने की खबर मिलती है लेकिन रेणु वहाँ नहीं ठहरता । डॉक्टर खन्ना और मेजर लाल को उसके रिक्शा चलाने का मज़ाक लगता है लेकिन वे रेणु के पेट की मजबुरी नहीं समझते !

'लौटते हुए' यह यात्री का बृहत उपन्यास होने पर भी उसकी कथावस्तु पूरी तरह से संगाठित नहीं है । यात्रीने इसमें कई अनावश्यक घटनाओं को जोड़ा है । जो मुद्दे उपन्यास के आधारस्तंभ लगते वे ही अधूरे लगते है । सिर्फ इलाज के खातिर डॉक्टर खन्ना के पास जानेवाले रेणु को खन्ना अपने परिवार का सदस्य बनाते है, और मेजर लाल उच्चवर्ग के होने के बावजूद रेणु जैसे मध्यवर्ग के युवक के साथ काफ़ी गहरा दोस्ताना रखते है, ये बातें असमान्य लगती हैं । यात्री ने उपन्यास में लिखा है कि रेणु निवेदिता को पढ़ाने जाता है लेकिन वह क्या पढ़ाता है इसका उल्लेख नहीं है । बिना जान-पहचान के निवेदिता की माँ रेणु के भोजन और रहने तक का प्रबंध करती है, यह बात अविश्वसनीय है । रेणु के पास नौकरी न होने पर भी निवेदिता रेणु के साथ जिंदगी बिताने की बात करती है, यहाँ पर उपन्यास में सच्चाई का अभाव लगता है । खन्ना और मेजर रेणु को दोस्त मानते हैं परंतु उसकी नौकरी के लिए कुछ प्रयत्न नहीं करते है । धवन की कहानी भी अनावश्यक लगती है । प्यार होने के बावजूद भी रेणु का निवेदिता और राज से न मिलना ? धवन की मौत दिखाने की यात्री की मानसिकता समझ में नहीं आती । रेणु के बेकार होने पर भी चाचा के किये पर ताने मारने की उसकी प्रवृत्ती असंगत लगती है । इस उपन्यास में बहुत-सी ऐसी बातें हो जो पाठकों के सामने अनेक प्रश्नचिन्ह खडी करती हैं । एक एक उच्चशिक्षित छात्र को अंत में रिक्शावाला बनाकर आज की भ्रष्ट, रिश्वतखोरी व्यवस्था किचड़ उछाला है । अगर रेणु पेट की आग से मज़बूर है तो वह कुछ भी कार्य बिना अंह से

कर सकता है लेकिन यात्री ने रेणु को अंहभाव से प्रेरित दिखाया है । भले ही यात्रीजी ने इस उपन्यास में कई समस्याओं को प्रस्तुत किया हो, फिर भी कथावस्तु के संगठन के अभाव में उपन्यास कमजोर लगता है । यहाँ आज के युवको का अंह, उनका इगो उन्हें कैसे बिखेरकर रखता है, इसका अच्छा उदाहरण रेणु हो सकता है ।

प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु में रेणु के जीवन के चढ़ावों-उतारों उसके जीवन की आशा-आकांक्षाएँ, प्रेम के बारे में रेणु की धारणाओं, रेणु की अंहमान्यता के कारण उसके जीवन में उभरे संघर्ष स्थिति के कारण रेणु की ज़िंदगी की आस्थिर एवं दोलायमान अवस्थाओं आदि का चित्रण प्रस्तुत करके से.रा.यात्रीने 'इगो' मनुष्य को कहाँ तक गिरा सकता है, इसे स्पष्ट किया है । इस उपन्यास में निवेदिता-राज और रेणु का प्रेमत्रिक है परंतु रेणु अस्थिर एवं चंचल मनोवृत्ति का होने के कारण वह स्थिर प्रेम की संकल्पना को स्वीकृत नहीं करता है । डॉ. खन्ना रेणु के जीवन के संबल लगते हैं जो समय-समय पर उसका दिशादिग्दर्शन करते हैं । एक निम्नमध्यवर्गीय व्यक्ति उच्चवर्ग में प्रविष्ठ होने समय उसमें हिनत्व की ग्रंथी कैसे बढती है, यह भी रेणु के माध्यम से स्पष्ट होता है । आज शिक्षा-क्षेत्र में बडा नशापान का दौर, उच्चशिक्षित अध्यापकों का शोषण शिक्षा-क्षेत्र की चिंतनीयता को उजागर करते हैं । रेणु-कौमी-आवाज पत्रिका के संपादक ककोड़वी, रेणु-ग्रामीण शिक्षा व्यवस्था के संचालक के बीच का संघर्ष रेणु के संघर्षशील व्यक्तित्त्व पर प्रकाश डालता है । रेणु व्यक्तिस्वातंत्र्य का पक्षधर और भ्रष्टाचारी प्रवृत्ति का विरोधक है । वह भ्रष्टाचारी शक्तियों से समझौता करने की अपेक्षा रिक्षा चलाना पसंद करता है । यहाँ से.रा.यात्री के विचारों पर मार्क्सवादी का प्रभाव लक्षित होता है तो रेणु-निवेदिता-राज के प्रेमत्रिकोण में फ्रायड का प्रभाव लक्षित होता है । एक के साथ प्रेम करते समय उसमें दूसरे की छाया को देखना, या संयोग मे घटित घटनाओं को प्रस्तुत करने समय लेखक ने फिल्मीकरण के पास अपनी कथावस्तु को ले छोडा है । यहाँ नशापन की प्रवृत्ति, शिक्षा-क्षेत्र की रिश्वतखोरी आधुनिक युगबोध को उजागर करती है । रेणु के 'इगो' के कारण वह खन्ना की नौकरी प्राप्त होने तक अपने घर में आकर रहने की सूचना, उसे पसंद नहीं आती । उपन्यास में पात्र और परिवेश के अनुकूल लगता है । निवेदिता, राज नारी पात्र हैं जो प्रेम के कायल है । डॉ. खन्ना, मेजर लाल, धवन साहब ककोड़वी उच्य वर्ग के पात्र होकर भी रेणु के बारे में सहानुभूति रखते हैं परंतु रेणु उनसे दूर भागता है । आपत्तिकाल में रामहरण उसकी सहायता करना है । भाषा पात्रानुकूल, पात्रों की प्रवृत्ति के अनुकूल है । पत्र-शैली, फ्लैश बैक शैली, संवाद

शैली, कथात्मक शैली आदि शैलियों का प्रयोग यात्रीजीने किया है । कथावस्तु पात्र-चरित्रचित्रण, वातावरण भाषा-शैली की दृष्टि से उपन्यास सफल है ।

5.2. अनजान राहों का सफर - सन 1980

से.रा.यात्री का लघु-उपन्यास 'अनजान राहों का सफर' यह नायिका प्रधान है । उपन्यास की कथावस्तु सुगठित है । इस उपन्यास में लेखक ने जीवन में अपने जाने-पहचाने व्यक्तियों की जिंदगी को उभारा है । उपन्यास की नायिका-'शिखा' की अपने जीवन में स्थित कठिणाईयों तथा तूफानो का चित्रण हुआ है । इस उपन्यास में कसौली पहाडी वातावरण है जहाँ कई वर्षो से आनेवाले यात्रियों की मुलाकात का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है ।

उपन्यास की नायिका उच्चशिक्षित होने के साथ कानपुर के किसी महिला महाविद्यालय में अध्यापक हैं । शिखा का चरित्र कलकत्ता से उपन्यास लिखने के हेतु आये हुए हिंदी के उपन्यासकार की प्रशंसिका तथा मददगार के रुपमें भूमिका निभाता है । वहाँ उसकी प्रशांत से भेंट होना, शिखा के विचारों का स्पष्ट होना, उसे लगता है कि कोई भी लेखक किसी के प्रति जीवनभर एकनिष्ट होगा यह कदापि संभव नहीं है ऐसा शिखा को लगना, आदर के साथ लेखक की भीतरी प्रवत्ति के बारे में शिखा द्वारा बातचीत करना, शिखा जैसी सुंदर, आकर्षक युवती का नलिन जी जैसे प्रौढ़ व्यक्ति के साथ होटल के एक ही कमरे में एक ही बिस्तर पर रहना प्रशांत के लिए आश्चर्यजनक लगना, शायद शिखा के बीच कोई दैहिक रिश्ता या उत्तेजनापूर्ण भाव न हो, शायद वह निरीह भाव से ही ठहरी हो ऐसा प्रशांत को लगना ये घटनाएँ शिखा-नलिन के खिंचत्व की निर्देशक लगती है।

एक दिन नलिनजी किसी कारण से सिमला जाते है । सिमला जाते वक्त प्रशांत को शिखा को घुमाने की इल्तजा करते है और कटु आलोचना से कहते हैं - "सारी औरतें एक सी ही बुध्दिहीन होती है । बहुत पढ़ी-लिखी विदुषी और घोर गँवार मे 'बेसिकली' कोई फर्क नहीं है । दोनों एक ही मिट्टी की बनी होती है । आदमी के संदर्भ में उनमें एक जैसी ही ईर्ष्या और संकीर्णता होती है - इतना संभव है कि अपनी कसौटी पर कसी हुई औरत के संपर्क में वह पुरुष को एंट्री अलाऊ कर दें ।"[9]

नारी की इतनी कड़वी आलोचना सुनकर शिखा कहती है कि या तो वह उसे अपनी शिष्या बनायें अथवा चलता कर दें नहीं तो वह दोनों के लिए काल साबित होगी ।

शिखा के साथ घुमते वक्त प्रशांत महसूस करता है कि औरत अपनी जिंदगी में

आयी हुई बेडियों से मुक्ति पाना चाहती है और इसे प्रगति कहती है । बाहर से यह परिवर्तन भी दिखाई देता है किंतु औरत की भीतरी जिंदगी इससे खोकली ही लगती है । चट्टान के गिरने पर, शिखा की टिप्पनी सुनकर प्रशांत हैरान हो जाता है ।

शिखा खुले स्वभाव की और स्पष्टवक्ता है । एक दिन उसने लेखक को कहा - "आपको सहानुभूति और समर्पण देनेवाली कोई समर्पणशील पाठिका ऐसी नहीं मिली जो स्थाई घर-द्वार दे सकी ।"[10] एक दिन प्रशांत शिखा को नरेश के साथ दोस्तीपूर्ण व्यवहार करते देख वह नरेश को सलाह देता है कि अच्छी कमाऊ और सुंदर लड़की है, कुँआरा मरने से बेहतर है शादी कर ले । प्रशांत के इस सलाह पर नरेश उससे शादी करता है । "आई कैन विन हर इफ आई चूज टू विन ।"[11] यह नरेश की प्रतिज्ञा असफल होती है । कई वर्षों के बाद जब नरेश और प्रशांत मिलते हैं तो नरेश उसे बताता है कि हनीमून के दिनों में प्रेम के चुंबन भी उसमें किसी उत्तेजना को निर्माण नहीं कर सके, जब कि उन दिनों में नारी दारुण प्यास की वजह से एनीमल जैसा बिहेवियर करती है । नरेश को शिखापर शक हो जाता है कि वह (शिखा) जरुर किसी और को चाहती है क्योंकि जितने दिन शिखा नरेश के साथ रही उनमें एक भी दिन उसने नरेश को उत्साहित नहीं किया था । शिखा का यह व्यवहार नरेश को अज़ीब लगता है । नरेश कहता है - "दुनियाँ में कोई भी नारी ऐसी नहीं है जो पुरुष को अपना जीवन साथी बना लोने के बाद किसी ठोस कारण के बगैर यों ही निराश कर दें, उसे तिरस्कृत करे या छोड़कर चली जाये ।"[12]

नरेश की तरह शिखा अपने पहले पती देवराज को छोड़ चुकी है । देवराज शिखा का वास्तव कामुक रुप जान चुका था इसीलिए देवराज लेखक से कहता है - "तुम लेखक लोग अपनी कथाओं में औरत की बहुत अवास्तविक तस्वीर पेश करते हो । असल में तुम सब गये गुजरे और काल्पनिक स्थितियों में जीने वाले लोग हो ।"[13]

देवराज शिखा का वास्तव रुप प्रकट करता है । वह कहता हैं कि शिखा को नर्वसनेस के दौरे पड़ते थे फिर भी वह उसे बहुत चाहता है लेकिन शिखा दाम्पत्य संबंध में इतनी ठंडी और कठोर थी कि कोई भी पति बरदाश्त नहीं कर सकता था । एकान्त मिलने पर बदल जाना उसकी फितरत थी इतना ही नहीं तो कंधो पर रखा हाथ भी शिखा सह नहीं सकती थी । आवेश का सारा उत्साह तिरोहीत कर देती थी । देवराज ऐसी अज़ीब-सी ठंडी, बर्फ की सिल्ली को बर्दाश्त नहीं कर सकता था इसीलिए देवराज ने शिखा को अपने वैवाहिक जीवन से मुक्त कर दिया था ।

दस सालों बाद मसूरी में शिखा की मुलाकात प्रशांत से होती हैं । मसूरी में शिखा पचीस साल के युवक के साथ रह रही थी । शिखा संदीप के साथ भी उसी तरह एक ही कमरें में एक ही शय्या पर ठहरी थी, जिसतरह नलिन के साथ ठहरी थी । शिखा प्रशांत को पत्तों के खेल में पार्टनर बनने को कहती है तब प्रशांत द्वारा जो जबाव मिलता है वह दृष्टव्य है । वह कहता है कि- "वह कितनी देर पार्टनर बन सकती है । किसी भी दिन किसी की भी पार्टनर बनके जा सकती है ।" प्रशांत के कथन से यह स्पष्ट होता है कि शिखा किसी एक आदमी के साथ निष्ठता से नहीं रह सकती है । पुरुषों को अपने सौंदर्य के जाल में फॉसना और उनके पैसों से चैन तथा ऐश करना ही उसका काम था । संदीप जो हाऊस सर्जन था उसे भी शिखा ने अपने सौंदर्य जाल में फँसाया था ।

एक दिन प्रशांत शिखा को उसके इस तरह के बर्ताव के बारे में पूछता है कि जिंदगी में उसे ऐसा एक भी आदमी नहीं मिला जिसे वह स्वीकार कर पाती । शिखा ने जो जवाब दिया है , वह सोचने लायक है । शिखा कहती है "आज तक उसके जीवन में आये लोग सिर्फ प्रणयी और याचक थे, पुरुष एक भी नहीं, जिसमें उसे अनुगामिनी बनाने की ताकद हो । आज की औरतें पुरुष का अर्थ आराम और सुविधा मानती है लेकिन शिखा पूराने युग के पौरुष को ही मानती थी जो उसे रोंद न दे । न कि संपन्नता के पिंजड़ो में बंद कर दे।" शिखा समझती है कि अगर लड़की को यदि वरन का हक समाज से मिल जाये तो भोगवादी विचारवाले को कभी नहीं वरेगी । देवराज के बारे में वह सोचती है कि नारी को नारीत्त्व की पूर्णता देनेवाला पौरुषत्त्व उसके पास नहीं था । वह केवल याचक था । और नरेश तो सिर्फ रात के अंधेरे में देह के सत्य का वायवी स्पर्शों से ही केवल वह साक्षात्कार करना चाहता था और शिखा ऐसे लिजलिजे प्रेमी या पती को बर्दाश्त नहीं कर सकती थी और इसीलिए उसने उन्हें छोड़ा था ।

'अनजान राहों का सफर' के बारे में संक्षिप्त में कहा जा सकता है कि - "शिखा के मन में एक ज्वालामुखी सतत लावा प्रवाहित करता बहता है । उसे तन और मन की सहज तृप्ति देनेवाला एक भी पुरुष नहीं मिला ।"[14] लेकिन शिखा में अपनी ओर से पुरुष को प्रोत्साहित करने की क्षमता नहीं है । और अगर होती तो पहले पती देवराज और उसके संबंध में दरार ही नहीं पडती । अत: प्रशांत शिखा को सचाई समझाकर देवराज के पास भेज देता है । यात्रीजी का यह उपन्यास सुंगाठित होने साथ ही समाज के सभी पुरुषों को शिखा के इस बर्ताव या व्यवहार पर सोचने के लिए मजबूर करता है, यहीं उपन्यास की सफलता है ।

इस उपन्यास में शिखा ऊपरी तौर पर मुक्त नारी लगती है परंतु उसकी प्रेम की संकल्पना भिन्न है । वह प्रेम में भोग को स्थान नहीं देना चाहती है । अपने मन की तुष्टि के लिए वह अनेक पुरुषों के सान्निध्य में रहती है । अपने पति की मन की तुष्टि की अपेक्षा भोगी प्रवृत्ति देखकर वह उसे तलाक देती है । एक उच्चशिक्षित अध्यापिका होने के कारण विभिन्न पुरुषों के सान्निध्य में रहती है इससे आभास होता है कि वह मुक्त नारी है । उसका आकर्षण एक प्रौढ उपन्यासकार के प्रति लगता है । शिखा नर्वस ब्रेकडाऊन की पीडा से ग्रस्त है । वह अपने पति देवराज की प्रवृत्ति को देख उसे तलाक देती है । यहाँ शिखा के तुफानी व्यक्तित्व की पहचान है, वह सोचती है कि उसके जीवन में पुरुष आया ही नहीं, जो आये वे प्रणयी और याचक ठहरे । शिखा पुराने युग के पौरुष को मानती है । उसे संपन्नता का पिंजडा उचित नहीं लगता । अपने पति देवराज के बारे में उसका विचार है कि उनमें नारी को नारीत्त्व देने की पूर्णता नहीं है । उसकी जिंदगी में जितने, देवराज से संदीप तक पुरुष आये वे सब उसे अनुचित लगे । यहाँ मोहन राकेश के नाटक 'आधे अधूरे' की सावित्री की याद आती है जो पुरुषों के पुर्णत्त्व की तलाश में असफल होती है । यहाँ की शिखा 'अनजान राहों की सफर' करती है, ऐसा लगता है । कसौली पहाडी प्रदेश में घटित यह कथा चिंतनीय है ।

5.3. कई अँधेरों के पार (1981)

आधुनिक उपन्यासकार से.रा.यात्री का 'कई अँधेरों के पार' (1981) यह उपन्यास रविवार पत्रिका में धारावाहिक रुप से प्रकाशित होकर बहुचर्चित एवं लोकप्रिय हो चुका है । इस उपन्यास में लेखक ने उच्चमध्यवर्ग के और मध्यवर्ग के परिवार की मानसिकता को अभिव्यक्त किया है । विवाह सिर्फ शारीरिक संबंध होता है या मानसिक बंधन इस सामाजिक सवाल को लेकर लेखक ने नोकरीपेशा वाली नारी की मानसिकता तथा मध्यवर्ग की स्थिति पर प्रकाश डाला है । यात्रीजी अपने उपन्यास का आरंभ नाटकीय ढंग से करते है । यात्री ने यह उपन्यास दो अध्यायों में लिखा है । उपन्यास का नायक खन्ना है ।

उपन्यास का नायक खन्ना अपनी दूसरी पत्नी-सुशीला को मायके भेजकर पिक्चर देखने जाता है । टिकट न मिलने के कारण वह घर जाने को मूड़ता है तभी वह एक ऐसी औरत से टकराता है, जो किसी समय उसकी बीवी थी । शालिनी को देखकर खन्ना बौखला उठता है । वह मन में चाहता है कि शालिनी की देह को पीस डाले । खन्ना उसे गालियाँ देना चाहता है किंतु वह ऐसा नहीं कर पाता । कुछ कारण से उनमें तलाक हो

जाता है फिर भी खन्ना उसके साथ कॉफी पीता है । घर में शालिनी उस कमरें में नहीं जाती जहाँ उसने अपने रंगीन क्षण बिताये थे - "जिस घर के साथ कभी वह गृह-वधु के रुप में जुड़ी रहीं हो वहीं एक बाहरी अजनबी की स्थिति में पहुँचे तो उसके मन पर क्या बीतेगी ।"[15]

तलाक के बाद शालिनी ने दूसरी शादी नहीं की थी, जब कि खन्ना ने सुशीला से शादी कर ली थी । शालिनी को देखकर खन्ना को शालिनी के साथ गुजारी जिंदगी की याद आती है । थोड़ी-बहुत शिक्षा लेने के बाद खन्ना के पिता ने रिश्वत देकर उसे सप्लाई विभाग में नौकरी दिलवा दी । कुछ दिनों बाद राशनिंग के कारण उसके पिता बेकार हुए तो उन्हें घर भी खाली करना पड़ा खन्ना को काफ़ी मेहनत के बाद क्वार्टर मिला था । माँ तथा छोटे भाई-बहन भी बचपन से कष्टों से लड़ते रहे । उसकी बहन को भी माँ ने बड़ी मुश्किल से नौकरी दिलवा दी । खन्ना का पूरा परिवार आर्थिक कठिनाईयों से जुझता रहा । खन्ना के बी.ए. करने के बाद उसकी शादी शालिनी से कर दी जाती है ।

शालिनी नौकरी करती है । वह शिक्षित होने के कारण शादी के बाद के कई रंगीन सपने देखती है, जो सपनें ही रह जाते है । शादी की पहली रात तो उन दोनों ने घर की जिम्मेदारियों का जिक्र करते ही गुजारी । खन्ना मध्यवर्गीय परिवार के कारण न तो अपनी बीवी को न घूमने के लिए ले जाता है न तो पिक्चर दिखाने ले जाता है । खन्ना ने शालिनी के मन को समझा ही नहीं कारण - "जो आदमी दिनचर्या में पिसकर इतना खुरदरा हो गया हो कि आईने में अपना चेहरा भी भूले-भटके देखता हो उसके लिए दूसरे के मन की जटिल भावनाओं को समझना एक दुष्कर कार्य है ।"[16]

एक दिन स्वयं शालिनी ने पिक्चर देखने का प्रोग्राम बनाया तो आश्चर्य के साथ हो वह खुशी से झुम उठता है । उसे गर्व महसूस होता है कि शालिनी जैसी सुंदर, सुसंस्कृत लड़की उसकी बीवी है । खन्ना को बार-बार ऐसा लगता है कि अपनी नयी नवेली दुल्हन को किसी होटल में ले जा कर खाना खिला सकने में या पिक्चर दिखाने में वह असमर्थ है । उसका मन आत्मग्लानी से व्यथित हो उठता है । फिल्मों में दिखाई जानेवाली घटनाएँ उसके लिए विद्रुप होती है । जब शालिनी के पिता कुछ नसीहत और सलाह देने लगते है तब खन्ना क्रोधित हो उठता है ।

एक दिन शालिनी का भाई उसे ले जाना चाहता है तो खन्ना कुछ कारणवश उसे नहीं भेजता । खन्ना की इस कृति का परिणाम बुरा होता है । शालिनी अपने पिता के घर चली जाती है, तो लौटती नहीं । खन्ना उसे लेने जाता है तो शालिनी के घरवाले खन्ना

को भला-बूरा कहते है । शालिनी का भाई खन्ना से कहता है - "खन्नाजी आप लोग शालिनी जीजी को किस तरह एकस्प्लायट (शोषण) कर रहे है, वह परर्फेक्टली इन हयुमन हैं ।"[17] वह खन्ना को बताता है कि जब तक आप परिवारवालों से अलग मकान नहीं लेते तब तक जीजी आपके साथ नहीं रहेगी । अपने साले की बात सुनकर यह विश्वास नहीं हो रहा था कि शालिनी के घरवाले इतने संकुचित विचार करनेवाले हैं । वह इस शर्मनाक प्रसंग के बाद बिना कुछ कहे घर लौटता है ।

खन्ना एक दिन कोर्ट का सम्मंस पाता है जिसमें शालिनी के वकिल ने खन्ना पर आरोप लगाया था कि खन्ना ने शालिनी के साथ अमानवीय व्यवहार करने के साथ उसके गहने भी हड़प कर लिये है, और नौकरी की तनखा भी दबोच लेते है । खन्ना के घर में रहने से उसके जीवन को धोखा हो सकता है इसीलिए शालिनी को तलाख दिया जाये । कोर्ट का संमस देखकर क्रोधित खन्ना शालिनी के घर जाता है और क्रोध से शालिनी को बेइज्जत करता है तो शालिनी के घरवाले खन्ना की पिटाई करके पुलिसथाने में देते हैं जहाँ से खन्ना को एक पागलखाने भेज दिया जाता है ।

खन्ना के पागल होने की बात से उसका परिवार ध्वस्त हो जाता है । लेकिन बड़े धैर्य से उसकी माँ परिवार की जिम्मेदारी निभाती है । खन्ना जब पागलखाने से लौटता है तो उसे नौकरी मिलती है । घर की स्थिति में बदलाव आता है । उसका भाई डॉक्टर बन जाता है और बहन की शादी भी हो जाती है । खन्ना के मामा ने गाँव की गँवार लड़की से खन्ना की शादी करा दी ।

'सुशीला' खन्ना की दूसरी पत्नी अपने नाम को सार्थ कराने वाली है । उसमें आदेश के पालन करने की नम्रता के साथ समर्पण और मूक भाव था । खन्ना को तीन वर्षो में एक पुत्र और पुत्री भी हो गयी है । सुशीला कुछ दिनों के लिए मायके गयी है ।

बरसों पूर्व अपनी पहली पत्नी शालिनी से खन्ना ने अपने वैवाहिक संबंध तोड़ दिये थे, वहीं शालिनी आज लौटी है । असल में शालिनी के पिता और भाईयों ने ही उसकी तनख्वाह हड़पने के लिए तलाक का प्रपंच रखा था मगर उसकी भाभियों ने उसे उनके साथ रहने नहीं दिया । उसे कहीं रहने का ठिकाना नहीं मिल रहा था । हर औरत उसके जैसी सुंदर औरत को अपने घर में किरायेदार के रुप में भी रखने को तैयार नहीं था कि शायद वह अपने मर्दो को अपने मोहजाल में न फाँस ले । लेकिन किस्मत ने शालिनी को खन्ना के ही घर में किरायेदार के रुप खड़ा कर दिया । खन्ना को लगता है कि यदि सुशीला को शालिनी की सच्चाई मालुम होती तो सुशीला उसे कभी अपने मकान में रहने

की इजाजत नहीं देती ।

एक दिन रात को खन्ना घर लौटता है तो शालिनी दरवाजा खोलती है । शालिनी को देखकर खन्ना बेहोश हो जाता है, वह उसे समझाने की कोशिश करती है किंतु खन्ना उसे कहता है कि वह उसके बिना रह नहीं सकता तो शालिनी उसे पूरी तरह से समार्पित हो जाती है । शालिनी खन्ना को कहती है कि तुम शालिनी के बगैर रह तो सकते हो मगर उसके देह के बिना रह नहीं पाओगे । शालिनी की बात सुन कर खन्ना सुन्न हो जाता है ।

एक दिन शालिनी स्वयं सुशीला को उसके और खन्ना के बारें में बता देती है और जाने लगती है तो सुशीला उसे जाने नहीं देती वह जानती है कि अगर शालिनी घर छोड़कर गयी तो खन्ना कहीं और जाने लगेगा । इसीलिए सुशीला शालिनी के संबंधो को स्वीकार करके रोक लेती है । अतः खन्ना को दो बीवीयों का पती बनना पड़ता है ।

यात्रीजी ने इस उपन्यास में खन्ना को किन-किन कठिणाईयों से गुजरना पड़ा उसका वर्णन अत्यंत प्रभावी रुप से किया है । इस उपन्यास में कथावस्तु के विस्तार को मर्यादित रखने के साथ पात्रों के चरित्र-चित्रण के पहलुओं को पूरी सफलता से अभिव्यक्त करने में यात्री सफल हुए है । यात्रीजी ने मध्यवर्ग के युवक की मानसिकता का संयत भाषा में प्रस्तुत किया है । खन्ना का यह कथन उसकी मानसिकता स्पष्ट करता है - "उस अतिपरिचित देह का पूरा-पूरा इतिहास अब मेरे लिए दूर की चीज बन गयी थी ।"[18] वह शालिनी को कभी भूल नहीं पाया । वह उसे कहता है कि वह उसके बिना रह नहीं सकता ।

जिस कमरे को किराये पर देने के लिए लड़ाई हुई थी, उसी कमरें में शालिनी किरायेदार के रुप में आती है । खन्ना और शालिनी के बीच फिर संबंध स्थापित होते हैं, तो सुशीला की प्रतिक्रिया क्या होगी यह सवाल पाठकों के संमुख उपस्थित होता है, लेकिन यात्री ने इस समस्या या सवाल को सुशीला की समझदारी से सुलझाया है । और अंत में खन्ना दो पत्नियों का पती बनकर अपनी गृहस्थी का बोझ निभाता है । खन्ना कभी अंधेरों के पार होकर यथा-स्थिति को प्राप्त होता है । यहाँ मध्यवर्ग की मानसिकता को तलाशने का प्रयत्न सफलता के साथ लेखक ने किया है । नौकरी पेशावाली नारी की दयनीय स्थितिका चित्रण किया है । पैसे के लालच में शालिनी के भाई और पिताने शालिनी को तलाक देने पर उकसाया था परंतु भावजोंद्वारा उसे घर में स्थान न दिया जाने के कारण उसे विस्थापित होना पडा था और अंत में भटकती हुई शालिनी को खन्ना के घर में ही किरायेदार के रुपमें रहना पडा था । पुरुष प्रधान संस्कृति में पति मात्र बहुविवाह कर सकता है परंतु

स्त्री इसके विरोध में होती है । शालिनी इसका उदाहरण है वह अपना दूसरा विवाह नहीं कर पाती है । खन्ना की अर्थिक तंगी के कारण शालिनी के सभी सपनों का मन की कोमल भाव-भावनाओं का चकनाचुर होना, अपनी सुंदर पत्नी शालिनी को फिल्म दिखाना, उसे होटल में खाना खिलाना खन्ना को कठिण हो जाना, उसके तनखे के पैसे हडप करना, उसके साथ अमानवीय व्यवहार करने के कारण शालिनीद्वारा तलाक की मांग करना, खन्ना का ससुराल में जाकर वहाँ के लोगों को भली-बुरी सुनाने के बाद वहाँ के लोगों द्वारा उसकी पीटाई की जाना, इसी अंतराल में खन्ना की स्थिति में बदलाव आ जाना । उसके एक भाई का डॉक्टर बनना, बहन की शादी हो जाना, खन्ना की शादी भी एक गँवार लडकी सुशीला से होना, तलाक का प्रपंच रचनेवाली शालिनी का बेघर बनकर किरायेदार के रुपमें खन्ना के घर में टिक जाना, उसका फिर खन्ना के सामने समार्पित होना, दूसरी पत्नी सुशीला को शालिनी का राज समझने पर खन्ना के साथ उसकी पत्नी बनकर रहने को उसे बाध्य करना, खन्ना का दो पत्नियों का पति बनकर गृहस्थी का बोझ ढोना ये सारी घटनाएँ खन्ना के सामने उभरे अंधियारों को पार करने की उसकी स्थिति को उजागर करते हैं । यहाँ तलाक की समस्या, बहुपत्नीत्व की समस्या, नौकरीपेशा नारी की दयनीयता पर खुलकर प्रकाश पडता है । अंत में नारी ही नारी का संबल एवं सहारा होती है इसे सुशिला के माध्यम से स्पष्ट किया जाता है । बहुविवाह की समस्या को लेखक ने अत्यंत चतुराई के साथ सुशीला के माध्यम से सुलझाकर सुशीला के व्यक्तित्व को ऊँचा बनाया है । शालिनी भी गलत रास्ते का अवलंब नहीं करती है । यहाँ सुशीला और शालिनी में कोई सौतीडाह की स्थितियों को नहीं दिखाया है । दो नारियों के बीच अटके एक पुरुष खन्ना की दयनीयता को भी अधिक मात्रा में अभिव्यक्त नहीं किया है । यह एक सरल साधारण उपन्यास लगता है । इसका परिवेश शालिनी का और सुशीला का ससुराल और मायका है । परिवेशानुकूल पात्र और उनकी मानसिकता को ढाला है । भाषा भी पात्रों की मानसिकता को निर्धारित करती है । वर्णनात्मक, पूर्व कथात्मक शैली यहाँ प्रमुख है । यात्रीजी का यह उपन्यास शिल्प की दृष्टि से सफल है ।

निष्कर्ष — हमने प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध में यात्रीजी के 'सुबह की तलाश,' 'दराजो में बंद दस्तावेज,' 'बीच की दरार' आदि तीन उपन्यासों को केंद्र में रखकर इन तीन उपन्यासों का गहराई से चिंतन किया है परंतु इन तीन उपन्यासों के साथ-साथ यात्रीजी के 'लौटते हुए' 'अनजान राहों का सफर,' 'कअी अंधेरों के पार' ये तीन उपन्यास भी महत्त्वपूर्ण है जिनमें सामाजिक समस्याओं का गहराई से वर्णन हो चुका है । इस लघु-शोध-प्रबंध में इन तीन उपन्यासों का आशयात्मक अनुशीलन करके लघु-शोध-प्रबंध-को पूर्णत्व देने का प्रयास किया है ।

यात्रीजी के अन्य महत्वपूर्ण तीन उपन्यास शिक्षा-विषयक आधुनिक युगबोध, शिक्षा-नीति की चिंतनीय स्थिति, युवकों की अस्मित की तलाश में टूटन, प्रेम-त्रिकोण, इगाइस्ट युवकों की मानसिकता, उच्चशिक्षित नारियों की प्रेम-परिकल्पना, नारियों की भोग की तरफ अनासक्ति, नारियों का नर्वस ब्रेक डाऊन, मुक्त नारी के आत्मबंधन, नारी के नारित्व न देनेवाले पुरुषों की नारी द्वारा उपेक्षा, पुरुष की बुध्दिमत्ता को सोचने के लिए बाध्य करनेवाली आजकी नारी विचार-प्रणाली, जीवन के कई अंधेरों के पार होकर नयी जिंदगी तलाशने वाले आज के पुरुष, नौकरी पेशा नारी की दयनीयता, पैसे के लालच में ससुराल और पीहर के बीच उसकी होनेवाली खींचातानी, पुरुष को प्राप्त हुआ बहुपत्निव का अधिकार, नारीका ही नारी के प्रति उदार दृष्टिकोण आदि जीवन के कअी विशिष्ट पहुलुओं का दर्शन करनेवाले यात्रीजी के 'लौटते हुए,' 'अनजान राहों का सफर,' 'कई अंधेरों के पार' ये तीन उपन्यास हैं । आलोच्य उपन्यासों की तुलना में ये तीन उपन्यास भी महत्त्वपूर्ण है । इन उपन्यासों पर अन्याय न होने पाये इसीलिए इनका भी आशयात्मक अनुशीलन प्रस्तुत करने का प्रामाणिक प्रयत्न किया है ।

सन **1974** से **1981** के बीच लिखे इन उपन्यासों में से.रा.यात्रीने आधुनिक युगबोध, आधुनिक युगबोध की प्रतिबध्दता, शिक्षा-व्यवस्था की अराजकता पर खुलकर प्रकाश डाला है ।

संदर्भ सूची :-

1) यात्री से.रा. - लौटते हुए - भावन प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1974 पृ.6

2) वही - पृ.50

3) वही - पृ.100

4) वही - पृ.103

5) वही - पृ.247

6) वही - पृ.231

7) वही - पृ.291

8) वही - पृ.305

9) यात्री से.रा. - अनजान राहों का सफर - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1980 पृ.13

10) वही - पृ.22

11) वही - पृ.

12) वही - पृ.87

13) वही - पृ.60

14) वही - पृ.116

15) यात्री से.रा. - कई अँधेरों के पार- राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1981 पृ.22

16) वही - पृ.37

17) वही - पृ.90

18) वही - पृ.11